डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

दिल्ली पुस्तक मेला में साहित्य अकादेमी का 'बाल साहिती' कार्यक्रम आयोजित

हर उम्र के पाठक के लिए है बाल साहित्य – दिविक रमेश

किताबों में बचपन को सुसंस्कृत करने का माद्दा – हरीश नवल

यह समय बाल साहित्य का स्वर्ण युग – घमंडीलाल अग्रवाल

29 अगस्त 2018। नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी द्वारा दिल्ली पुस्तक मेले के दौरान बाल साहित्य पर केंद्रित कार्यक्रम 'बाल साहिती' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि, आलोचक और बाल साहित्यकार दिविक रमेश ने की।

कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकारों हरीश नवल, घमंडीलाल अग्रवाल, राकेश चक्र और ज़ेबुन्निशा ने सहभागिता की। ज़ेबुन्निशा ने अपनी बाल कहानी 'हरी मछली' का पाठ किया। कहानी माँ और बेटी के बिछड़ने और मिलने पर केंद्रित थी, जिसमें कई नीति की बातें समाहित थीं। राकेश चक्र ने देशभक्ति पर आधारित अपनी कई बाल और किशोर कविताएँ सस्वर प्रस्तुत कीं। स्वच्छता और मच्छरदानी पर केंद्रित बाल कविताएँ श्रोताओं को बहुत पसंद आईं।

घमंडीलाल अग्रवाल ने 'बादल क्यों बरसते हैं' शीर्षक से अपनी बाल कहानी का पाठ किया तथा 'कान', 'बात', 'नाना–नानी' आदि पर केंद्रित कई कविताएँ भी सुनाईं। उन्होंने बाल साहित्य की वर्तमान साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह समय बाल साहित्य का स्वर्ण युग है। उन्होंने बाल साहित्य के विकास के लिए प्रकाशकों और अभिभावकों की भूमिका को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इन्हें अपने नए दृष्टिकोणों के साथ बाल साहित्य को बच्चों तक पहुँचाना चाहिए।

हरीश नवल ने अपने बचपन में बाल साहित्य की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि किताबों में बचपन को सुसंस्कृत करने का माद्दा होता है। बाल साहित्य ही हमें विवकेशील, नीतिवान और अंततः अच्छा नागरिक बनाता है। उन्होंने कहा कि (जीवन) 'मूल्य' ही हमें विचारों से धनवान बनाते हैं इसलिए अच्छी किताबों के मोल (दाम) को न देखकर उनसे मिलने वाले सुसंस्कारों को प्राथमिकता देनी चाहिए और अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों को अच्छा साहित्य अवश्य उपलब्ध कराएँ।

(जारी...)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

कार्यक्रम के अध्यक्ष दिविक रमेश ने कहा कि बच्चे हमारी साँस की तरह होते हैं, इसलिए हमें उनका विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य हर उम्र के पाठकों के लिए है। हमें बच्चों को उपदेश देने की जगह अपना साझीदार बनाना होगा तभी वे हमारी बातें मान सकेंगे। बाल साहित्यकारों को यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि उनके साहित्य में समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व हो। यह भी बहुत ज़रूरी है कि आज के नए समय में नई सोच और नई सृजनात्मकता के साथ बाल साहित्य रचा जाए जिसमें अब के बच्चे का मनोविज्ञान भी हो। उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छी स्थिति है कि ऐसा बाल साहित्य रचा भी जा रहा है और हमारी भारतीय भाषाओं के पास बाल साहित्य का ख़ज़ाना है। उन्होंने कहा कि विशेष अवसरों पर बाल साहित्य की पुस्तकें 'दान' नहीं बल्कि 'भेंट' की जानी चाहिए। इससे पठन–पाठन की संस्कृति का विकास हो सकता है।

साहित्य अकादेमी में संपादक अनुपम तिवारी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों का ज़िक्र करते हुए बाल साहित्य के प्रोत्साहन, प्रकाशन और संवर्धन के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयासों की विशेष रूप से चर्चा की और सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

(के. श्रीनिवासराव)